हर आतंकी का यही हश्र तय है

कृष्णमोहन झा/

विगत दिनों कश्मीर के हंदवाडा इलाके में आतंकियों द्वारा बंधक बनाए परिवार के सदस्यों को उनके चंगुल से छुडाने के लिए आतंकियों से लड़ते हुए जब भारतीय सेना के एक मेजर और एक मेजर सहित पांच बहादुर जवानों को अपनी शहादत देनी पडी थी तो सारेदेशवासियों का खून खौल उठा था और सारा देश अधीरता से उस घडी की प्रतीक्षा कर रहा था जब कश्मीर घाटी में आतंकीवारदातों की साजिश रचने वाले आतंकवादी संगठन के मुखिया को ही हमारी सेनामौत के घाट उतार कर अपने पांच बहादुर जवानों की मौत का बदला लेगी। उक्त आतंकी वारदात की जिम्मेदारी जिस आतंकवादी संगठन हिजबुल्लाह मुजाहिदीन ने ली थी उसके आपरेशनल कमांडर रियाज नाइकू एवं उसके एक साथी. को सुरक्षा बल के जवानों ने दो दिन के अंदर ही मौत के घाट उतार दिया। गणित के शिक्षक का व्यवसाय छोडकर आतंकवादी बने रियाज नाइकू ने अतीत में घाटी में भारतीय सुरक्षा बलों के कई जवानों एवं पंचायत कर्मियों की हत्या करवा दी थी। अतीत में जब पुलिस ने उसके पिता को हिरासत में लिया था तब उसने कुछ पुलिस कर्मियों एवं पंचायत कर्मियों का अपहरण कर लिया था। कश्मीर में अमन चैन के लिए वह कितना बड़ा खतरा था इसका अंदाजा इसी बात से लगाया जा सकता है कि सरकार की नजरों में वह ए++ श्रेणी का आतंकवादी था और सरकार ने उस पर 12 लाख रुपए का इनाम घोषित कर रखा था। उसी ने सुरक्षा बालों की कार्रवाई में मारे जाने वाले आतंकियों के जनाजों को गन सेल्यूट देने की परंपरा शुरू की थी उसे अपने आतंकी संगठन के अंदर मास्टरजी के नाम से पुकारा जाता था। उसने हिजबुलमुजाहिदीन के जरिए भले ही अनेक आतंकी वारदातों की साजिश रची थी परन्तु उसे खुद अपनी जान जाने का इतना डर था कि वह अपने घर जाने के लिए सुरंग का इस्तेमाल करता था और जब सेना के जवानों ने मौत के घाट उतारा तब भी वह अपने घर के तहखाने में छुपा हुआ था। इस तहखाने की जानकारी सुरक्षा बलों को उस कारीगर से मिली थी जिसने यह तहखाना बनाया था। पुलिस ने इस कारीगर को अपने कब्जे में ले लिया था। रियाज़ नाइकू के बारे में पुलिस को जानकारी हिजबुलमुजाहदीन संगठन के प्रतिद्वंदी गुट द रेजिस्टेंट फ्रंट से मिल रही थी। कश्मीर घाटी में हिजबुलमुजाहिदीन के आपरेशनल कमांडर के रूप में उसका असर बढने से यह गुट बहुत खफ़ा हो गया था और पुलिस को उसके बारे में सूचनाएं देने लगा था। पुलिस पिछले 6 माह से उसे घेरने में लगी हुई थी लेकिन पिछले दिनो जब हिजबुल्लाह मुजाहिदीन ने भारतीय सेना के कर्नल और मेजर सहित पांच बहादुर जवानों की शहादत की जिम्मेदारी ली तो उसी समय यह तय हो गया था कि रियाज़ नाइकू का अंत निकट आ गया है। वह अपनी बीमार माँ को देखने जब वह एक सुरंग के रास्ते घर तक आया तब उसे इस बात का जरा भी अंदाजा नहीं था कि भारतीय सेना के जवान अपने एक कर्नलऔर एक मेजर सहित पांच बहादुर जवानों की शहादत का बदला लेने के लिए प्रण कर चुके हैं। रियाज नाइकू जहां छुपा हुआ था उस स्थान तक पहुंचने के लिए पहले जे सी बी मशीनों से खुदाई की गई फिर सेना के जवान जब उसके पास पहुंचे तो उसने खुद को बचाने के लिए अंधाधुंध फायरिंग चालू कल दी परंतु इस बार तो उसकी मौत तय हो चुकी थीं। सुरक्षा बलों ने 4० किलो आईडी का विस्फोट करके उस बिल्डिंग को ही उड़ा दिया जहां वह सुरंग के रास्ते आया करता था । गौर तलब है कि इसके पूर्व वह तीन बार पत्थर बाजों की मदद से भाग निकला था। इस बार भी इलाके के कुछयुवकों ने उसके ढेर हो जाने के बाद पथराव किया इसलिए स्थिति को काबू में रखने के लिए घाटी के कुछ क्षेत्रों में कर्फ्यू लागू करने के साथ ही मोबाइल और इन्टरनेट सेवाओं पर रोक लगा दी गई है। गौरतलब है कि कश्मीर में वुरहान वानी के मारे जाने के बाद जो उपद्रव भड़के थे उसे प्रशासन भूला नहीं है इसलिए रियाज़ नाइकू की मौत के बाद अशांति की आशंका के चलते स्थिति को काबू में रखने के लिए प्रशासन ने पहले से ही एहतियाती इंतजाम कर रखे हैं.। पूर्ववर्ती जम्मू कश्मीर राज्य के मुख्यमंत्री एवं नेशनल कांफ्रेंस के नेता उमर अब्दुल्ला ने सुरक्षा बलों के साथ मुठभेड़ में रियाज़ नाइकू के मारे जाने के बाद अपनी प्रतिक्रिया में कहा है कि रियाज़ नाइकू ने अपने हाथों में बंदूक थामी थी उसी दिन यह तय हो गया था कि उसका यही हश्र होना है। उमर का कहना बिलकुल सही है। अगर रियाज़नाइकू ने गणित शिक्षक के रूप में ही अपना कैरियर चुना होता तो उसकी कक्षाओं से न जाने कितने होनहार छात्र पढ़कर अपना भविष्य संवार सकते थे परंतु उसने् आतंकियों की संगत में आकर न केवल अपना भविष्य बर्बाद किया बल्कि वह देश की सुरक्षा के लिए भी खतरा बन गया और ऐसे अपराध के लिए उसे केवल मौत दी जा सकती थी वही उसको मिली। कश्मीर में वुरहान वानी और रियाज नाइकू जैसे आतंकियों को मारने में सुरक्षाबलों की सफलता आतंकवाद की कमर तोडने की दिशा में एक बड़ी उपलब्धि है।

संपादकीय

कितना लंबा लॉकडाउन

देश में लॉकडाउन खत्म होने को ही नहीं आ रहा। 25 मार्च से शुरू हुआ लॉकडाउन खत्म होना था, लेकिन अब यह 17 मई तक चलेगा। इसमें कई छूटें शामिल होंगी, जिसके लिए 11 पृष्ठों का एक ब्यौरा केंद्र सरकार ने जारी किया है। कुछ छूटें तो लॉकडाउन के दूसरे दौर में भी दी गई थीं, लेकिन उनके बल पर उद्योग-धंधे तो दूर, कृषि मंडियां और दुकानें तक नहीं खुल पाईं।

कोरोना वायरस से दुनिया भर में पैदा हुए अभूतपूर्व हालात को देखते हुए लॉकडाउन को एक अनिवार्य बुराई के रूप में लिया गया था। सबको अंदाजा था कि पहले से ही लड़खड़ाई हुई भारतीय अर्थव्यवस्था के लिए 21 दिनों का कंप्लीट लॉकडाउन मारक सिद्ध हो सकता है। लेकिन सवाल लोगों की जिंदगी का था, तो सबने किसी तरह का विरोध प्रदर्शित किए बगैर इस कठोर कदम का पालन किया। फिर इसे 19 दिन और अब 14 दिन के लिए बढ़ा दिया गया है। अध्ययन बता रहे हैं कि लॉकडाउन को लगातार बढ़ाते जाने से देश में डिमांड-सप्लाई का संतुलन ध्वस्त हो रहा है और अर्थव्यवस्था का कचूमर निकला जा रहा है। नई घोषणा में कहा गया है कि ग्रीन जोन में कई तरह की आर्थिक गतिविधियों हो सकेंगी, लेकिन क्या इससे देश में कोई औद्योगिक हलचल शुरू हो पाएगी? मुंबई और दिल्ली ही नहीं, कोलकाता, चेन्नै, हैदराबाद, बेंगलुरु और अहमदाबाद जैसे देश के कई और बड़े शहर भी पूरे के पूरे रेड जोन में हैं। सवाल यह है कि जब उद्योग-धंधों का केंद्र माने जाने वाले देश के ज्यादातर शहर ठप पड़े होंगे तो लॉकडाउन की छूटों का क्या व्यवहारिक अर्थ बचेगा? ग्रीन, ऑरेंज और रेड जोनों में जिन गतिविधियों की छूट है वे आपस में मिलकर ऐसा घालमेल बना रही हैं कि उनका नतीजा पुलिस-प्रशासनिक मशीनरी की मनमर्जी सुनिश्चित करने वाला ही निकलेगा। केंद्र की नियमावली लागू करने में राज्य सरकारों को कोई छूट नहीं है, साथ ही इसके पालन में भेदभाव भी दिखाई दे रहा है। किसी राज्य को जरा सा विचलन पर डांट पड़ जाती है तो किसी के विपरीत आचरण को भी नजरअंदाज कर दिया जाता है।आपदा कानून के तहत शक्ति का केंद्रीकरण भारत में तीन दशक पहले तक जारी लाइसेंस-कोटा-परमिट राज की याद दिला रहा है। लोगों की सुरक्षा, उनके लिए रोजी-रोटी, काम-धंधे का इंतजाम सत्ता के अतिशय केंद्रीकरण और धुंध भरी नियमावली से नहीं हो पाएगा। राज्य सरकारों और स्थानीय प्रशासन को फैसले की आजादी देनी पड़ेगी। वे अपनी जिम्मेदारी और विवेक से तय करें कि क्या चलेगा और क्या बंद होगा। वरना बीमारी से हम बच भी गए तो बेरोजगारी और भुखमरी से मारे जाएंगे।

सू- दोकू क्र.016

	2		6		8		3	
9		8		3		4		
							5	
5		2			7		6	
	8		4			1		3
				9				
8			9				1	
	5			1		6		2
		1	7				4	

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक र सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.15 का हल

2	6	3	8	1	4	9	7	5
9	5	4	2	6	7	3	1	8
8	7	1	9	3	5		6	2
6	2	7	5	4	8	4	3	9
3	9	8	6	7	1	2	5	4
4	1	5	3	2	9	6	8	7
5	3	2	4	8	6	7	9	1
1	8	6	7	9	2	5	4	3
7	4	9	1	5	3	8	2	6

जाया न जाये जज्बा

मनमोहन कौर।

पाक सत्ताधीशों की निर्लज्जता व निकृष्ट सोच का पता इस बात से ही चलता है कि जब पूरी मानवता कोरोना संकट से जूझ रही है, वह राज्य पोषित आतंकवाद को बढ़ावा दे रहा है। कुपवाड़ा जिले के हंदवाड़ा इलाके में कर्नल आशुतोष शर्मा, मेजर अनुज सूद, नायक राजेश व लांस नायक दिनेश तथा पुलिस सब-इंस्पेक्टर काजी पठान का सर्वोच्च बलिदान देश को ऐसी टीस दे गया, जिसे आसानी से नहीं भुलाया जा सकता। इन वीरों को इसलिये अप्रतिम शौर्य का परिचय देते हुए बलिदान देना पड़ा क्योंकि वे आतंकियों के कब्जे से बंधक नागरिकों को सुरक्षित बचाना चाहते थे। इसके बावजूद यह हमारी रणनीति की भी चूक है कि हमारे वीर सैनिक आतंकियों के बुने जाल में फंस गये। हम बड़े खतरे का आकलन नहीं कर सके। खैर, यह जांच के बाद ही स्पष्ट होगा कि इन अधिकारियों का संपर्क कैसे टूटा और कैसे वे आतंकवादियों के जाल में फंसे। इसी बीच सोमवार को घात लगाकर किये गए हमले में तीन सीआरपीएफ जवानों की मौत ने हंदवाड़ा के जख्म और गहरे कर दिये। यह पाकिस्तान की हताशा का ही नतीजा है कि एलओसी पर संघर्ष विराम उल्लंघन की घटनाएं लगातार बढ़ रही हैं। जम्मू-कश्मीर में अनुच्छेद 37० के खत्म होने और केंद्रशासित राज्य के बनने के बाद अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर तरह-तरह का प्रलाप काम न आने पर अब पाक इस मुश्किल दौर में आतंकवादियों को कश्मीर में भेज रहा है। इस साल अब तक पाकिस्तान 65० बार सीज फायर का उल्लंघन कर चुका है। हालांकि, अप्रैल माह में सेना व सुरक्षा बलों ने आतंकवादियों के सफाये के सफल अभियान चलाये और विभिन्न मुठभेड़ों में 28 चरमपंथियों को मार गिराया। एलओसी पर केरन सेक्टर के हादसे को अलग परिस्थितियों की वजह से छोड़ दें तो अप्रैल में हुई बीस मुठभेड़ों में सुरक्षाबलों को कोई क्षति नहीं हुई। इसके बावजूद कि पाक अब ज्यादा प्रशिक्षित आतंकवादियों को घाटी में भेज रहा है। हंदवाड़ा की घटना में मारे गये पाकिस्तानियों में लश्कर का कमांडर हैदर शामिल है।

घटना के बाद सेना प्रमुख एमएम नरवणे ने पाक को चेताया है कि सीज फायर तोड़ने और आतंक फैलाने के लिए पाक को सबक सिखाया जायेगा। साथ ही इस घटनाक्रम को वैश्विक जोखिम की संज्ञा दी है। उन्होंने माना कि पाक पोषित आतंकवादी नागरिकों को निशाना बनाकर विश्व में इसे आजादी का प्रोपेगेंडा के रूप में दिखाना चाहते हैं। निस्संदेह जब तक पाकिस्तान राज्य पोषित आतंकवाद को समर्थन देना बंद नहीं करता, उसे उचित जवाब देना जरूरी है। ऐसा इसलिए?भी है कि पाक आतंकवाद को राज्य नीति के रूप में इस्तेमाल कर रहा है। इसके बावजूद मुठभेड़ में हुई हाई प्रोफाइल?क्षति कई सवालों को भी जन्म देती है। टीम का संचार तंत्र का विफल होना, उन्हें समय पर पीछे से मदद का न मिलना कहीं न कहीं आतंक विरोधी मुहिम में किसी खामी की ओर भी इशारा करता है। ऐसा कैसे हुआ जब 21 आर.आर. के सीओ कर्नल आशुतोष शर्मा ऐसे अभियानों में दक्ष माने जाते थे और दो बार उन्हें सम्मान भी मिले थे। हमारी कोशिश हो कि इन वीरों का बलिदान व्यर्थ न जाये। साथ ही यह भी मंथन करना होगा कि हमें हंदवाड़ा में इतनी बड़ी क्षति क्यों उठानी पड़ी। चिंता की बात है कि कश्मीर में आतंकवाद का सिलसिला तमाम प्रयासों के बावजूद थमा नहीं है। ऐसे में कोशिश होनी चाहिए कि भविष्य में ऐसी आतंकरोधी रणनीति बने कि हमारी सेना, अर्धसैनिक बलों व जम्मू-कश्मीर पुलिस को कम से कम क्षति उठानी पड़े। निस्संदेह ऐसे अभियान बेहद विषम परिस्थितियों में चलाये जाते हैं। जहां भौगोलिक परिस्थितियां जटिल हैं, वहीं आतंकवादियों को भी स्थानीय समर्थन भी मिलता रहा है और मुठभेड़ के दौरान पत्थरबाजी जैसी घटनाएं भी सामने आती हैं। कोशिश हो कि हमारे सैनिकों को तकनीक व आधुनिक हथियारों से लैस किया जाये ताकि वे पाक के प्रशिक्षित आतंकवादियों का मुकाबला बिना क्षति उठाये कर सकें।